Swar Sindhu: National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music
A UGC CARE listed Journal
ISSN 2320–7175 (O) | Volume 12, Issue 02, August, 2024 Special Issue
http://swarsindhu.pratibha-spandan.org © The Author(s) 2024

पतन के पथ पर हिमाचली लोक संगीत : कारण एवं निवारण

PURAN CHAND
Research Scholar, Department of Music, Himachal Pradesh University, Shimla

सारांश

संगीत एक ऐसी विधा है जिसे समस्त ललित कलाओं में श्रेष्ठ स्थान प्राप्त है। गायन, वादन और नृत्य इन तीनों कलाओं के संयोग को ही संगीत कहा जाता है। वैसे तो ये तीनों कलाऐं स्वतन्त्र हैं परंतु स्वतन्त्र होते हुए भी गायन के अधीन वादन और वादन के अधीन नर्तन है। अत: संगीत के अंतर्गत गायन को ही सर्वोपरि माना जाता है। एक ओर तो भारतीय परम्परा में संगीत का प्रयोग आनंद प्राप्ति के लिए किया गया है वहीं जन साधारण ने धार्मिक उत्सवों में इसे मनोरंजन का साधन भी बनाया है। वास्तव में यदि देखा जाए तो हम चारों ओर से संगीत से घिरे हुए हैं। फिर चाहे वह पक्षियों का कलरव हो, नदी-नालों के पानी की स्वर लहरियाँ या फिर जंगलो में चलने वाली हवाओं की साँय-साँय की ध्वनियाँ। इन सभी में अप्रत्यक्ष रूप से संगीत समाहित है। पशु चराते हुए चरावाहो के गीत, खेतों में काम करते हुए लोगों के गीत, रोते हुए बच्चे को चुप कराने के लिए माँ की लोरियों के स्वर, बोझा ढोते हुए मजदूरो के गीत, सांस्कृतिक उत्सवो में, त्योहार विशेष पर प्रयुक्त गायन, वादन व नृत्य की परम्पराऐं विभिन्न गायन, वादन व नृत्य शैलियाँ आदि हमारे पारम्परिक लोक संगीत के उदाहरण हैं।

***मुख्य शब्द**: हिमाचल, लोक संगीत।*

भूमिका

किसी भी क्षेत्र की संस्कृति वह अनंत सागर है जिसमें नानाविध अमूल्य रत्न समाहित हैं। जिस प्रकार सागर की कोई सीमा नहीं होती उसी प्रकार संस्कृति को भी किसी परिभाषा में बांधना युक्तिसंगत नहीं होगा। लोगों के रहन-सहन सहित रीति-रिवाज, धर्म, मेले, त्योहार, लोक नृत्य, लोक नाट्य, लोक साहित्य, कला आदि सभी संस्कृत के अंग हैं। प्रत्येक व्यक्ति अपने मन के उदगारो को किसी न किसी रूप में व्यक्त करता है। मनुष्य अपने मन के प्रत्येक भाव को संगीत के माध्यम से ही व्यक्त कर सकता है। किसी व्यक्ति को कोई भी कार्य संगीत के माध्यम से बडी सहजता से सिखाया जा सकता है। पुरातन काल में जब मानव जाति असभ्य थी और उसे भाषा का ज्ञान नहीं था उस समय वह अपने मनोभावों को व्यक्त करने के लिए तरह-तरह की आवाजें निकालता था या फिर कुछ अस्पष्ट शब्दों का प्रयोग करता था यही वाणी उसका संगीत थी। अतः प्राकृतिक संगीत से ही लोक संगीत की उत्पत्ति मानी जा सकती है यही लोक संगीत शास्त्रीय संगीत का भी आधार है। लोक संगीत ही लोक जीवन को समझने का सहज माध्यम है। किसी भी क्षेत्र का संगीत सुनने से हमें वहां की संस्कृति का बोध सहज ही हो जाता है।

किसी भी क्षेत्र का संगीत वहां की संस्कृति का आईना होता है जिसे सुनने मात्र से वहां की सामाजिक, आर्थिक, भौगोलिक स्थिति का अनुमान लगाया जा सकता है। लोक गीतों को सुनने से, किसी क्षेत्र विशेष की संस्कृति या फिर वहां की सभ्यता का स्वतः ही बोध हो जाता है। हिमाचल प्रदेश के लोक संगीत में हमें विविधता का जो स्वरूप प्राप्त होता होता है, वह शायद ही किसी अन्य राज्य के संगीत में देखने को मिले। हिमाचल प्रदेश में हर किलोमीटर के बाद भाषा के कुछ शब्दों में अंतर दिखाई देने लगता है। ऐसे में यहां के संगीत को एक लाठी से हाँकना अपने आप में एक मूर्खतापूर्ण विषय है।

लोक संगीत का अर्थ

लोक संगीत 'लोक' और 'संगीत' दो अलग-अलग शब्दों के मेल से बना है। जो लोग, लोक या जनमानस का संगीत है वही लोक संगीत है। यही लोक संगीत की सही व्याख्या हो सकती है। लोक मानस की किसी भी अनुभूति को व्यक्त करने के लिए स्वर लय और ताल के आश्रय से ही लोक संगीत का जन्म होता है।

लोक शब्द की उत्पत्ति

लोक शब्द पाश्चात्य भाषा में 'फोक' के नाम से जाना जाता है जबकि जर्मनी में इसका उच्चारण 'वोक' किया जाता है। भारतीय विद्वानो के अनुसार लोक शब्द की उत्पत्ति दो प्रकार से हुई है।

- 'लोक्यते असो लोक छत्र' अर्थात संसार या विश्व का एक भाग।

Swar Sindhu: National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music
A UGC CARE listed Journal
ISSN 2320–7175 (O) | Volume 12, Issue 02, August, 2024 Special Issue
http://swarsindhu.pratibha-spandan.org © The Author(s) 2024

- 'लोक्यते लोकित:' अर्थात नजर डालना या प्रत्यक्ष ज्ञान प्राप्त करना

संगीत का अर्थ व परिभाषा-

संगीत के सम्बंध में यह कोई नहीं जानता कि इसका प्रारम्भ कब हुआ। मानव आदि काल से ही संगीत की साधना करता आया है। संगीत के सम्बन्ध में कुछ परिभाषाए निम्नलिखित हैं-

"संगीत जीवन के ताने-बाने का वह धागा है जिसके बिना जीवन सत और चित्त का अंश होकर भी आनंद रहित रहता है, नीरस प्रतीत होता है।'

सम (सम्यक) और गीत दोनों शब्दों के मिलने से ही संगीत बनता है। सम का अर्थ है अच्छा और मौखिक गाना ही गीत है। वाद्य और गीत दोनों के मिलने से ही गीत अच्छा बन सकता है।

गीतं वाद्यम च नृत्यम त्रय संगीत मुच्यते।

अर्थात गायन, वादन और नृत्य इन तीनों विधाओं का संयोग ही संगीत कहलाता है।

लोक संगीत की उत्पत्ति

जिस प्रकार संगीत की उत्पत्ति के सम्बंध में अनेक मत पाए जाते हैं उसी प्रकार लोक संगीत के विषय में भी विद्वान एकमत नहीं हैं लोक संगीत की उत्पत्ति के विषय में कुछ विद्वानों के विचार निम्नलिखित हैं-

पद्म विभूषण ओंकारनाथ ठाकुर के अनुसार, "देसी संगीत के विकास की पृष्ठभूमि लोक संगीत है। जिस देश या जाति का मानव जिस समय अपने हृदय के भावों को अभिव्यक्त करने के लिए उन्मुख हुआ उसी अवसर पर स्वयंभू प्रकृत्या उसके मुँह से उद्भूत हुए और उन्हीं स्वर गीत और लय को नियमबद्ध कर उसका जो शास्त्रीय विकास किया गया, कालांतर में वही संगीत लोक संगीत लोक संगीत बना।"

कुछ शास्त्रकारो व मुनियों के अनुसार संगीत की उत्पत्ति देवी-देवताओं से मानी गई है। कुछ दार्शनिकों का मत है कि आदि मानव ने जब अपने आस-पास नदियों की कल-कल, पक्षियों और जीव-जंतुओं की ध्वनियां, वायु की सायं-सायं, समुद्र की लहरों का शोर व बादलों की गर्जना सुनी होगी तो उसका मन आवश्य ही इससे प्रभावित व प्रतिध्वनित हुआ होगा। इन्हीं ध्वनियों जैसी आवाजें निकालने के लिए उसने कुछ वाद्ययंत्रों का अविष्कार किया होगा।

हिमाचल प्रदेश का लोक संगीत

हिमाचली लोक संगीत के अंतर्गत अनेकों विधाए आती हैं जिनमें से कुछ प्रमुख लोक विधाओं का वर्णन इस प्रकार है-

लोक गीत

लोक गीत लोक जीवन की आनंदानुभूतियो की अभिव्यक्ति का एक रूप है। साधारण जीवन में लोक संगीत घर-घर में व्याप्त है। लोक गीतों में देवी-देवताओ, वीरों की वीरता, राजाओं तथा प्रेमी-प्रेमिका का वर्णन मिलता है। स्थानीय बोली में ये वर्णन गीतों के साथ सुनाए जाते हैं। लोक गीतों में न केवल आनंद सृजन करने वाले तत्व रहते हैं अपितु ऐसे तत्व भी होते हैं जो गायक और श्रोताओं के मन में प्रेम, वैराग तथा भय जैसे भाव उत्पन्न कर सकते हैं। लोक गीतों में दुःख-सुख दोनों को स्थान मिलता है। लोक गीतों के साथ विभिन्न लोक वाद्यों का वादन किया जाता है। कुछ लोक गीत केवल एक ही गायक द्वारा स्वतंत्र रूप से गाए जाते हैं जबकि कुछ लोक गीत ऐसे भी हैं जो समूह गान के रूप में गाए जाते हैं और इनके साथ लोक वाद्य ढोल, नगाडा, शहनाई तथा एकतारा आदि का प्रयोग बहुतायत मिलता है।

लोक नृत्य

लोक नृत्य लोक संगीत का ही अंग है। संगीत का अर्थ ही गायन, वादन व नृत्य होता है। अतः लोक संगीत का अर्थ भी लोक गायन, लोक वादन तथा लोक नृत्य होना स्वभाविक ही है। यदि लोक नृत्य के संदर्भ में देखा जाए तो लोक नृत्य विभिन्न स्थानों में वहां के रीति-रिवाजो

तथा भौगोलिक परिस्थितियों के अनुकूल होते हैं। कांगडा, ऊना, मण्डी आदि जिलों में जहां झमाकडा, गिद्दा, करियाला आदि लोक नृत्य प्रसिद्ध हैं वहीं शिमला, सिरमौर, कुल्लू, किन्नौर, लाहौल-स्पिति में नाटी नामक पहाडी नृत्य अपनी लोक संस्कृति को संजोए हुए।

लोक गाथाऐं

जनमानस अपने अस्तित्व को बनाए रखने के लिए हमेशा क्रियाशील रहता है। लोक अनुभवों को स्मरण रखने के लिए उन्हें सुनने की प्रक्रिया यहीं से विकसित हई। इसी प्रक्रिया के परिणामस्वरूप कथा कहने की परम्परा चली। दैनिक कर्मों से निवृत होकर परिवार के सदस्यों को घर के बुज़ुर्गों द्वारा कथा सुनाए जाने की परम्परा बहुत प्राचीन है। इन्हें गाथाओं के नाम से भी जाना जाता है। इन गाथाओं में मनुष्य पशु-पक्षी, देव-दानव, राजा व परियाँ आदि सभी चरित्र भाग लेते हैं। ये गाथाऐं भौगोलिक परिस्थितियों के कारण एक-दूसरे से भिन्न होगी हैं या इसमें अंतर आ जाता है। एक जगह सुनी हुई गाथा कोई दूसरा व्यक्ति दूसरी जगह दूसरे अंदाज में सुनाएगा।

लोक नाट्य

जब किसी कथा को कलाकारों द्वारा संवाद या अभिनय के माध्यम से प्रस्तुत किया जाता है तो उसे लोक नाट्य कहा जाता है। डॉ. महेंद्र भानावत ने लोक नाट्य शब्द को इस प्रकार परिभाषित किया है, "लोकधर्मी रूढ़ियों की अनुकरणात्मक अभिव्यक्तियों का वह नाट्य रूप जो अपने-अपने क्षेत्र में लोक मानस को आह्लादित व उल्लासित करता है, लोक नाट्य कहलाता है।

डॉ. ओझा के अनुसार, "प्रधानतः नृत्य गीति व वाद्य के द्वारा ही नाटक खेला जाता है। वार्तालाप, रोना-हंसना आदि सम्पूर्ण क्रियाकलाप गेय पदों द्वारा प्रदर्शित होते हैं।"

अतः हम कह सकते हैं कि लोकमानस का सम्बंध लोक नाट्य से है। लोक नाट्य में सम्बंधित क्षेत्र की स्थानीय बोली का प्रयोग होता है। लोक नाट्यो का उददेश्य मनोरंजन के साथ-साथ शिक्षा का प्रचार प्रसार करना तथा सामाजिक कुरीतियों को व्यंग्य द्वारा उजागर करना होता है।

युवा वर्ग की लोक संगीत में रुचि न होना- किसी भी लोक कला या परम्परा के संरक्षण में युवा वर्ग की अहम भूमिका होती है क्योंकि युवा वर्ग के माध्यम से ही लोक कलाओं एवं लौकिक परम्पराओं का हस्तांतरण सम्भव है। आज का युवा पाश्चात्य संस्कृति के रंग में इस कदर रंगा हुआ है कि वह लोक संगीत सुनने में शर्मिदंगी महसूस करता है। लोक संगीत सुनना तो दूर युवा वर्ग लोकभाषा में वार्तालाप करना भी लज्जा का विषय समझता है। माता-पिता द्वारा बचपन से ही उसे लोक संस्कृति से दूर रखा जाता है और लोक भाषा के स्थान पर हिन्दी भाषा में वार्तालाप करना सिखाया जाता है। अब जिस भाषा का हमें ज्ञान ही नहीं होगा उस भाषा में निहित गीतों के प्रति अरुचि होना स्वभाविक ही है।

लोक संगीत के क्षेत्र में अनुसूचित एवं पिछडे वर्ग की सक्रियता- संगीत के इतिहास के अध्ययन से यह ज्ञात होता है कि वैदिक काल के पश्चात से ही संगीत की बागडोर एक ऐसे वर्ग के हाथ में रही है जिसे समाज में सम्मानित स्थान प्राप्त नहीं था। ऐसा वर्ग विशेष समाज में सदैव ही हेय दृष्टि से देखा जाता रहा है। उदाहरणार्थ बौद्ध काल में संगीत वेश्याओं तक सीमित हो गया। वहीं जैन काल में डोम जाति के लोग संगीत प्रियता के लिए प्रचलित रहे। वर्तमान समय में लोक संगीत की स्थिति भी कुछ इसी तरह की है। चाहे संगीत व्यवसायी वर्ग की बात करें या फिर देव स्थानों में देव वाद्यों का वादन करने वाले वादक वर्ग की इसमें निहित सभी सदस्य अनुसूचित जाति वर्ग से सम्बंधित होते हैं। देव स्थानों में इन ताल वादकों के पद पैत्रिक होते हैं। सामान्य वर्ग की स्मृति में यह बात समाहित रहती है कि संगीत केवल निम्न वर्ग के उपयोग की वस्तु है। यदि वे भी इसका प्रयोग करेंगे तो समाज में उन्हें भी उसी दृष्टी से देखा जाएगा। यद्यपि उच्च वर्ग में भी कुछ लोग ऐसे होते हैं जिन्हें संगीत सीखने में दिलचस्पी होती है परंतु लज्जावश वे अपनी इस रुचि का दमन करते हैं। परिणामस्वरुप संगीत प्रेमी वर्ग संकुचित होता जा रहा है। संगीतजीवी वर्ग के अतिरिक्त सामान्य वर्ग का युवा वर्ग लोक संगीत में कोई विशेष दिलचस्पी नहीं रखता। ऐसे में लोक विधाओं के संरक्षण हेतु उत्तराधिकारी ही नहीं हैं। असंख्य ऐसी लोक विधाऐं हैं जो उत्तराधिकारियों के अभाव में ही विलुप्त हो चुकी हैं।

Swar Sindhu: National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music
A UGC CARE listed Journal
ISSN 2320–7175 (O) | Volume 12, Issue 02, August, 2024 Special Issue
http://swarsindhu.pratibha-spandan.org © The Author(s) 2024

लोक कलाकारों में सांगीतिक ज्ञान का अभाव

किसी भी कला या सांगीतिक विधा के संरक्षण में उस विधा से सम्बंधित लोगों की विशष भूमिका रहती है। किसी भी लोक विधा को यथावत रुप से जन साधारण के समक्ष प्रस्तुत करना कलाकारों पर ही निर्भर करता है क्योंकि कलाकारों द्वारा लोक संगीत को समाज में जिस तरह से प्रस्तुत किया जाता है अधिकांश जनता द्वारा लोक संगीत के उसी स्वरुप को वास्तविक समझा जाता है और भावी पीढी के लिए वही संगीत संजोया जाता है। वर्तमान समय में प्रसिद्धि की लालसा में पारम्परिक लोक विधाओं के नाम पर ऐसा संगीत परोसा जा रहा है जिसका लोक संगीत से दूर दूर तक कोई सम्बंध नहीं है। लोक कलाकारों को लोक भाषा का भी कोई ज्ञान नहीं है और वे लोक गीतों में हिंदी काव्य मिश्रित कर प्रस्तुत कर रहे हैं जिससे लोक संगीत की वास्तविकता विलुप्त होती जा रही है।

लोक वाद्यो के विकल्पों का प्रयोग

लोक संगीत के स्वरुप को शाश्वत रखने में लोक वाद्यों की अहम भूमिका रहती है। लोक वाद्य किसी भी स्थान विशेष के लोक संगीत के परिचायक होते हैं। उदाहरणार्थ ढोल-नगाडा आदि वाद्यों का प्रयोग पहाडी राज्यों के ऊपरी हिमालयी क्षेत्रों में निम्न हिमालयी क्षेत्रों की अपेक्षा अधिक देखने को मिलता है परंतु आजकल लोक संगीत के प्रस्तुतिकरण के समय इन वाद्यों का प्रयोग न के बराबर देखने को मिलता है। लोक गीतों की रिकार्डिंग के दौरान इन वाद्यो का प्रयोग नही किया जाता क्योंकि एक समय में एक स्थान पर इतने लोकवाद्यो एवं उनके वादकों का उपलब्ध हो पाना सम्भव नही है। वर्तमान समय में हमारी वैज्ञानिक तकनिक इतनी उन्नत है कि आजकल ऐसे वाद्ययन्त्र भी मौजूद हैं जिनमें एक ही वाद्य के माध्यम से सभी वाद्ययंत्रों की ध्वनिया निकाली जा सकती हैं। लोक गीतों की रिकार्डिंग में आजकल इन्हीं वाद्यों का प्रयोग किया जाता है। इन वाद्य यन्त्रो के प्रयोग से लोक वाद्यों को प्रोत्साहन नहीं मिल पाता है और लोक लोकवाद्यों से अनभिज्ञ रह जाते हैं। वर्तमान समय में ऐसे बहुत से वाद्य हैं जो विलुप्ति की कगार पर खडे हैं और मात्र शोध का विषय बन कर रह गए हैँ।

आर्थिक कारण

हिमाचल प्रदेश एक दुर्गम पहाडी क्षेत्र है जहां के अधिकतर लोग आर्थिक दृष्टि उतने सुदृढ़ नहीं हैं। जिविकोपार्जन के लिए धन क होना अत्यंत आवश्यक होता है और हिमाचली लोग अर्थोपार्जन के लिए सदैव अपने कामों मे व्यस्त रहते हैं। चाहे यहां के लोक कलाकारो की ही बात करें, तो यही स्थिति उन पर भी लागू होती है। लोक कलाकार आर्थिक दृष्टी से इतने सुदृढ़ नहीं हैं कि वे अपनी कला के संरक्षण व प्रदर्शन के लिए उपयुक्त मंच तालाश सकें या उपलब्ध करा सकें। हिमाचल प्रदेश के अधिकांश कलाकार जीवन यापन के लिए किसी अन्य व्यवसाय पर आश्रित रहते हैं क्योंकि हिमाचल प्रदेश में ऐसी कोई व्यवस्था नहीं है जहाँ लोक कलाओं के प्रदर्शन से अर्थोपार्जन किया जा सके । हालांकि हिमाचल प्रदेश में वर्ष में एक या दो बार ऐसी प्रतियोगिताऐं आयोजित की जाती हैं जिनमें लोक संगीत का प्रदर्शन किया जाता है और विजेताओं को आकर्षक नकद पुरुस्कार भी वितरित किए जाते हैं परंतु लोक कलाकार जो वास्तविक रुप से इन विधाओं से जुडे हैं , उन्हें अज्ञानतावश या जानकारी के अभाव में इन कार्यक्रमों में भाग लेने का अवसर नहीं मिल पाता या फिर आयोजकों द्वारा अपने खास लोगों को अवसर किए जाते हैं।

लोक वाद्यों की अनदेखी

हमारे कुछ पारम्परिक लोक वाद्य ऐसे हैं जो सदियों से मंदिरों के भीतर पडे हुए हैं व कभी-कभी शुभ अवसरो पर ही बाहर निकाल कर इनका वादन किया जाता है। जबकि ये वाद्य प्रतिदिन उपयोग में लाए जाने चाहिए। मंदिर के पुजारियों को प्रतिदिन पूजा-अर्चना के समय इन वाद्यों का वादन करवाना चाहिए ताकि आम जनता भी इन वाद्यों से परिचित हो सके और इनका संरक्षण किया जा सके।

लोक संगीत के संरक्षण हेतु उपाय

- लोक संगीत के संरक्षण का कार्य प्राथमिक स्तर से शुरु होना चाहिए। वर्तमान समय में गांव हमारे राष्ट्र निर्माण की बुनियादि ईकाई है। इसलिए प्रत्येक गांव में समय-समय पर जिसमें लोक संगीत की प्रस्तुतियां करवाई जानी चाहिए ऐसा करने से लोक संगीत के संरक्षण के साथ-साथ लोगों में सामाजिक समरसता का भाव भी विकसित होगा।

- युवा वर्ग में सांगीतिक रुचि विकसित करने के लिए सर्वप्रथम बच्चों को लोकभाषा से अवगत कराना होगा व उन्हे शादी-विवाह में ले जाकर पारम्परिक लोक संगीत दिखाना पडेगा। ऐसा करने से उनमें न केवल लोक संगीत के प्रति रुचि बढेगी बल्कि उनमें लोक संगीत सीखने की जिज्ञासा भी विकसित होगी।
- लोक संगीत से छेडछाड को रोकने के लिए प्रमाणन बोर्ड की स्थापना करने की आवश्यकता है। प्रमाणन बोर्ड द्वारा केवल उन्हीं रचनाओ को प्रमाणित किया जाना चाहिए जो लोक संगीत की कसौटियों पर खरी उतरती हों व वास्तव में लोक संगीत का प्रतिनिधित्व करती हों।
- लोक संगीत को सामाजिक कारा से मुक्त करके सर्वसुलभ बनाना होगा। इसके लिए सामान्य या उच्च वर्ग के लोगों को भी संगीत सीखने के लिए प्रेरित करना होगा और यह तभी सम्भव है जब लोक संगीत के प्रति उनकी संकीर्ण मानसिकता दूर होगी।
- लोक कलाकारो की आर्थिक स्थिति को सुधारने के लिए उन्हें रोजगार के अवसर प्रदान करने पडेंगे व समय-समय पर पर ऐसे कार्यक्रमों जिनमें कलाकारो की प्रस्तुतियाँ करवाकर आर्थिक सहायता प्रदान की जाए साथ-साथ सांगीतिक कार्यक्रमों मे पाश्चात्य वाद्यवृंद के स्थान पर लोक वाद्यों को प्रमुखता देनी पडेगी। ऐसा करने से ना केवल लोक संरक्षण होगा बल्कि लोक कलाकारो की आर्थिक स्थिति भी सुदृढ होगी।

निष्कर्ष

लोक कलाऐं संस्कृति का सार होने के साथ-साथ सामाजिक जीवन का आईना भी होती हैं। यह लोक संगीत हमारे पूर्वजों की सम्पदा, उनकी धरोहर है। इसे यथावत अपनी भावी पीढी के लिए सुरक्षित रखना हमारा परम कर्तव्य है। कला व संस्कृति के प्रति जनानुराग राष्ट्रीय उत्थान का एक शुभ लक्षण है।

सन्दर्भ

वर्मा धीरेंद्र. (2020. हिंदी साहित्य कोश, वाराणसी ज्ञानमण्डल लिमिटेड ।

मिश्र लालमणी. (2022). भारतीय संगीत वाद्य, भारतीय ज्ञानपीठ, नई दिल्ली ।